International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 15-03-2022, Accepted: 01-04-2022, Published: 16-04-2022
Volume 8, Issue 2, 2022, Page No. 112-115

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि पर अभिभावक की शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन

Jai Nath Yadav
Assistant Professor, Sardar Patel University, Balaghat, Madhya Pradesh, India

सारांश
शैक्षणिक उपलब्धि की दृष्टि से वर्तमान समय की आवश्यकता के अनुसार बच्चों की शिक्षा में अभिभावक का क्या योगदान है? क्या सभी अभिभावक अपने बच्चों को शिक्षण पर यथोचित सहयोग देने में समर्थ है? प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि पर अभिभावक की शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन करना है न्यादर्श के रूप में उच्च, मध्य एवं निम्न स्तरीय अभिभावकों के 180 बालक–बालिकाओं का चयन किया गया। न्यादर्श से प्राप्त बालक–बालिकाओं के शैक्षणिक उपलब्धि पर अभिभावक की शिक्षा का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है क्योंकि विभिन्न शैक्षणिक स्तर अभिभावकों के शैक्षणिक उपलब्धि में अंतर नहीं पाया है।

मूल शब्दः शैक्षणिक उपलब्धि, अभिभावक, शिक्षा के प्रभाव

प्रस्तावना
अनादि काल से वर्तमान तक शिक्षा का महत्व कभी भी कम नहीं हुआ है ऐसा माना जाता है कि बिना शिक्षा के मानव एक पशु के समान होता है। मानव एक सामाजिक प्राणी है और शिक्षा का कार्य उसके जीवन को उत्तम बनाना होता है। शिक्षा जगत में परिवार औपचारिक साधन के रूप में होता है वह उसकी प्रथम पाठशाला होती है।
वर्तमान परिप्रेक्ष्य में बाल केन्द्रित शिक्षा की नीव रखी गयी है जिसमें शिक्षक अभिभावक और समाज इन सभी का महत्वपूर्ण योगदान है बालक के चेतन और अचेतन मन पर पड़ने वाले सभी प्रभावों से परिचित होना आवश्यक होता है, क्योंकि इन प्रभावों का अध्ययन किये बिना व्यक्तित्व का विकास असंभव है। नई शिक्षा नीति 2020 में इस बात पर महत्वपूर्ण बल दिया गया है कि अभिभावकों और शिक्षक के मध्य एक सामंजस्य होना चाहिए यदि शिक्षक बच्चे के पारिवारिक वातावरण से परिचित होगा तो वह उसके विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे पायेगा।
कई शिक्षा विद्दों ने इस संदर्भ में अपने विचार प्रस्तुत किये है हम ये भी जानते है कि शैक्षिक उपलब्धि एक पाठ्यक्रम के नाम से जानी जाती है और वह योग्यता न होने पर बालक अलग–अलग मायने से शैक्षणिक प्रगति करता है या फिर हम कह सकते है कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शिक्षा का मूल्यांकन को ही हम शिक्षा बोलते है। इस मूल्यांकन के द्वारा हम उसकी शैक्षणिक उपलब्धि को ज्ञात कर सकते है और उस शैक्षणिक उपलब्धि से हम ये पता लगाते है कि उसने कितनी उन्नति की, कितना सीखा और कितनी दक्षता से उस कार्य को सम्पन्न किया।
वर्तमान में दण्ड को भी नकारा गया है ये बोला जाता है कि इससे बच्चा हीन भावनाओं का शिकार हो जाता है और अपनी भावनाओं को व्यक्त नहीं कर पाता है समय के साथ–साथ परिवार की शैक्षिक कार्य परिवर्तित हुए हैं। आज बालकों की शिक्षा औपचारिक हो रही हैं जो विभिन्न आयु स्तर पर बालक की रूचि व योग्यता के अनुसार शिक्षा विद्यालयों द्वारा दी जाती है, अभिभावक द्वारा प्राप्त शिक्षा बालक के व्यक्तित्व की ऐसी आधारशिला है जिसे वह कभी नहीं भूलता।
वर्तमान शोध में हमने अभिभावक की शिक्षा और शैक्षिक उपलब्धि को ध्यान में रखकर वर्तमान समय में बालक की शिक्षा में अभिभावकों के योगदान को प्रतिबिम्बित किया है। वमादेववप्पा, एच.बी. (2005) ने पाया कि अभिभावक सम्मिलित तथा शैक्षणिक उपलब्धि में महत्वपूर्ण और सकारात्मक संबंध पाया गया जो अभिभावक अधिक सम्मिलित हुए और जो अभिभावक कम सम्मिलित हुए उनके लड़कियों के परिणामों में महत्वपूर्ण अंतर पाया गया। जायसवाल एस., सिन्हा एस. के., कुमारी के. और अरोरा, ए. (2003) ने पाया कि जिन बच्चों के अभिभावक को प्रोत्साहन अधिक होता है चाहे वे सरन जनजाति के हो या चाहे इसाई जनजाति के हो उनकी शैक्षणिक उपलब्धि अधिक होती है और जिन अभिभावकों का प्रोत्साहन कम होता है उनके बच्चों का शैक्षणिक उपलब्धि भी कम होती है। जुडी, जैमी (2000) में पाया कि शैक्षणिक तैयारी ताकि कला में क्रियात्मक सहयोग शैक्षणिक उपलब्धि में सहायक होते है मित्रों की सहयोगिता भी शैक्षणिक सफलता को प्रभावित करती है। अग्रवाल, के.एल. (1986) ने पाया कि उच्च अभिभावक प्रोत्साहन जिन लड़के–लड़कियों को प्राप्त हुआ उनका शैक्षणिक विकास भी उच्च रहा अन्य लड़के–लड़कियों की अपेक्षा साथ ही यह प्राप्त हुआ कि विभिन्न क्षेत्रों के विद्यार्थियों में अभिभावक प्रोत्साहन भिन्न–भिन्न पाया गया। अध्ययन के माध्यम से जो निष्कर्ष निकलेगे उनके माध्यम से विद्यार्थी, प्रशासक, शिक्षक और अभिभावकों को यह सुझाव दिये जा सकेंगे कि किस प्रकार से अभिभावक शिक्षा अपने बालकों के शैक्षिक उपलब्धि के विकास में सहायक होता है। जिससे कि वे अपने बच्चों की शिक्षा के विकास में सहयोग देगे।

उद्देश्य
1. बालकों की शैक्षणिक उपलब्धि पर अभिभावक की शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन।
2. बालिकाओं की शैक्षणिक उपलब्धि पर अभिभावक की शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन।
3. बालक–बालिकाओं की शैक्षणिक उपलब्धि पर अभिभावक की शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन।

परिकल्पनाएँ

1. बालकों की शैक्षणिक उपलब्धि पर अभिभावक की शिक्षा का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
2. बालिकाओं की शैक्षणिक उपलब्धि पर अभिभावक की शिक्षा का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
3. बालक–बालिकाओं की शैक्षणिक उपलब्धि पर अभिभावक की शिक्षा का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

चरः प्रस्तुत शोध कार्य हेतु शोधकर्त्ता द्वारा निम्न चरों को लिया गया है।

- **स्वतंत्र चरः** अभिभावक की शिक्षा
- **परतंत्र चरः** शैक्षणिक उपलब्धि
- **नियंत्रित मूल्यः** कक्षा 8वीं तथा लिंग

अध्ययन विधि

प्रस्तुत शोध कार्य सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु न्यादर्श निम्नानुसार लिया गया है–उत्तर प्रदेश के मऊ जिले के माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा 8वीं के 180 विद्यार्थियों को चुना गया है।

तालिका 1

अभिभावक का शैक्षिक स्तर	बालक	बालिका	योग
उच्च स्तरीय शिक्षा	30	30	60
मध्य स्तरीय शिक्षा	30	30	60
निम्न स्तरीय शिक्षा	30	30	60
योग	90	90	180

उपकरण

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु आंकड़ों के संकलन के लिए निम्न उपकरण का प्रयोग किया गया है।

1. शैक्षणिक उपलब्धिः कक्षा सातवीं के परीक्षा के प्राप्तांक

परिणामों का विश्लेषण

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु परिकल्पनाओं के आधार पर परिणामों का विश्लेषण निम्नानुसार किया गया है –

तालिका 2: अभिभावक के शैक्षिक स्तर (उच्च, मध्य एवं निम्न) का बालकों की शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव सम्बन्धी तुलनात्मक परिणाम

अभिभावक की शिक्षा	पदों का योग	मध्यमान	मानक विचलन
उच्च स्तरीय शिक्षा	40	63.71	8.55
मध्य स्तरीय शिक्षा	38	65.84	7.49
निम्न स्तरीय शिक्षा	12	65.57	6.42

तालिका 3: प्रसरण विश्लेषण की सारांश तालिका

प्रसरण के स्रोत	स्वतंत्रता के अंश	वर्गों का योग	मध्यमान वर्ग	'एफ' अनुपात	'पी' मान
समूहों में प्राप्त वर्गों का योग	2	95.38	47.69	0.77	>0.05
समूहों के अन्तर्गत व्याप्त	87	5377.78	61.81		

स्वतंत्रता के अंश – 2,87 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान – 3.11 0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान–4.88

उपरोक्त तालिका में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट हो जाता है कि बालकों की शैक्षणिक उपलब्धि पर अभिभावकों की उच्च, मध्य एवं निम्न शिक्षा, शैक्षिक स्तर पर प्रभाव नहीं पड़ता क्योंकि उच्च, मध्य एवं निम्न समूहों के मध्य 'एफ' अनुपात 0.77 आया है। जो सांख्यिकीय दृष्टिकोण से 0.05 के लिए निर्धारित मान 3.11 से बहुत कम हैं। उपरोक्त के आधार पर निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि अभिभावक के शैक्षिक स्तर (उच्च, मध्य एवं निम्न) का बालकों के शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव नहीं पड़ता है।

तालिका 4: अभिभावक के शैक्षिक स्तर (उच्च, मध्य एवं निम्न) का बालिकाओं की शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव सम्बन्धी तुलनात्मक परिणाम

अभिभावक की शिक्षा	पदों का योग	मध्यमान	मानक विचलन
उच्च स्तरीय शिक्षा	39	65.17	4.63
मध्य स्तरीय शिक्षा	39	65.14	4.06
निम्न स्तरीय शिक्षा	12	66.08	3.92

तलिका 5: प्रसरण विश्लेषण की सारांश तालिका

प्रसरण के स्रोत	स्वतंत्रता के अंश	वर्गों का योग	मध्यमान वर्ग	'एफ' अनुपात	'पी' मान
समूहों में प्राप्त वर्गों का योग	2	9.00	4.50	0.24	>0.05
समूहों के अन्तर्गत व्याप्त	87	1610.56	18.51		

स्वतंत्रता के अंश – 2,87 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान – 3.11 0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान – 4.88

उपरोक्त तालिका में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट हो जाता है कि बालिकाओं की शैक्षणिक उपलब्धि पर अभिभावकों की उच्च, मध्य एवं निम्न शैक्षिक स्तर का नहीं पड़ता क्योंकि उच्च, निम्न एवं मध्य समूहों के मध्य 'एफ' अनुपात 0.24 आया है जो सांख्यिकीय दृष्टिकोण से 0.05 के लिए निर्धारित मान 3.11 से बहुत कम है।
उपरोक्त के आधार पर निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि अभिभावक के शैक्षिक स्तर (उच्च, मध्य एवं निम्न) का बालिकाओं की शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव नहीं पड़ता है।

तालिका 6: अभिभावक के शैक्षिक स्तर (उच्च, मध्य एवं निम्न) का बालक–बालिकाओं की शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव सम्बन्धी तुलनात्मक परिणाम

अभिभावक की शिक्षा	पदों का योग	मध्यमान	मानक विचलन
उच्च स्तरीय शिक्षा	79	64.43	6.89
मध्य स्तरीय शिक्षा	77	65.48	5.97
निम्न स्तरीय शिक्षा	24	65.83	5.21

तालिका 7: प्रसरण विश्लेषण की सारांश तालिका

प्रसरण के स्रोत	स्वतंत्रता के अंश	वर्गों का योग	मध्यमान वर्ग	'एफ' अनुपात	'पी' मान
समूहों में प्राप्त वर्गों का योग	2	59.48	29.74	0.75	>0.05
समूहों के अन्तर्गत व्याप्त	177	7041.31	39.78		

स्वतंत्रता के अंश – 2, 177 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान – 3.06 0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान – 4.75

उपरोक्त तालिका में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट हो जाता है कि बालक–बालिकाओं की शैक्षणिक उपलब्धि पर अभिभावकों की उच्च, मध्य एवं निम्न शैक्षिक स्तर का प्रभाव नहीं पड़ता है क्योंकि उच्च, मध्य एवं निम्न समूहों के मध्य 'एफ' अनुपात 0.75 आया है। जो सांख्यिकीय दृष्टिकोण से 0.05 के लिए निर्धारित मान 3.06 से बहुत कम है।
उपरोक्त के आधार पर निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि अभिभावक के शैक्षिक स्तर (उच्च, मध्य एवं निम्न) का बालक–बालिकाओं की शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव नहीं पड़ता है।
उच्च, मध्य एवं निम्न शिक्षा प्राप्त अभिभावक के बालक–बालिकाओं की शैक्षणिक उपलब्धि परिणाम से ज्ञात होता है कि विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि पर अभिभावक की शिक्षा का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है। इसके कई कारण हो सकते है–जैसे उच्च शिक्षा प्राप्त अभिभावक की शैक्षणिक उपलब्धि उच्च होती है। वे अपने बच्चों का विद्यालय में दाखिला करवा देते हैं पर उनके पढ़ाई पर कोई ध्यान नहीं देते हैं और ग्रामीण क्षेत्र होने के कारण शिक्षा का वातावरण एवं आर्थिक अभाव के कारण उन पर पूरा ध्यान नहीं दे पाते हैं। कई शिक्षित अभिभावक अपने बच्चों को ऐसे विद्यालय में प्रवेश दिलाते है, जहाँ पर अध्ययन करना और आवास दोनों एक साथ होता है कभी–कभी उच्च अभिभावक अपने बच्चों की आवश्यकता को नहीं समझ पाते हैं और उन्हें पूरी शैक्षिक सुविधाएँ देने में असमर्थ हो जाते हैं। इसलिए उच्च, मध्य एवं निम्न स्तर के अभिभावक की शिक्षा का बालकों पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
शिक्षित अभिभावकों का पारिवारिक वातावरण कभी–कभी अच्छा नहीं होता है और बच्चों को नई–नई बातें सीखने को नहीं मिल पाती हैं और उनकी शैक्षिक जरूरतों को पूरा नहीं कर पाते है। जबकि अशिक्षित अभिभावक का पारिवारिक वातावरण अच्छा होता है और उनके बच्चों की जरूरते पूरी हो जाती है इसलिए उच्च, मध्य एवं निम्न स्तरीय अभिभावक के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि पर अभिभावक की शिक्षा का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि अभिभावक शिक्षा शैक्षणिक उपलब्धि पर सकारात्मक और नकारात्मक रूप से प्रभावित करती है अतः शोध परिणाम अभिभावकों, शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को मार्ग प्रशस्थ करने में सहायक होगे। कि किस प्रकार से सकारात्मक पक्ष को स्वीकार किया जाय एवं नकारात्मक पहलू को परिमार्जित करने का प्रयास किया गया।

निष्कर्ष

1. अभिभावक की शिक्षा (उच्च, मध्य एवं निम्न) का प्रभाव बालक की शैक्षणिक उपलब्धि पर नहीं पड़ता है।
2. अभिभावक की शिक्षा (उच्च, मध्य एवं निम्न) का प्रभाव बालिकाओं की शैक्षणिक उपलब्धि पर नहीं पड़ता है।
3. अभिभावक की शिक्षा (उच्च, मध्य एवं निम्न) का प्रभाव बालक–बालिकाओं की शैक्षणिक उपलब्धि पर नहीं पड़ता है।

संदर्भ ग्रंथ

1. अरोरा, डॉ. संतोष (2014) अभिभावक शिक्षा, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर।
2. भटनागर, सुरेश एवं सक्सेना, अनामिका (2004) आधुनिक भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ, मेरठ, आर.लाल. बुक डिपो।
3. बिहारी, लाल, डॉ. विश्वनाथ एवं त्रिपाठी, नरेश चन्द (2014) शिक्षा में नवाचार, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, पंचम संस्करण।

4. माथुर, डॉ. एस.एस. (1997) शिक्षा के दार्शनिक तथा सामाजिक आधार, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर।
5. पाठक, पी.सी. एवं त्यागी, जी.एस.डी. (1998) शिक्षा के सामान्य सिद्धांत, आगरा–2, विनोद पुस्तक मंदिर।
6. अलायशिस् मिस ग्रेसी (2004) विभिन्न व्यावसायिक परिवेश के किशोर छात्र–छात्राओं के संदर्भ में आत्म–प्रत्यय एवं शैक्षणिक उपलब्धि एक तुलनात्मक अध्ययन, शोध प्रबंध।
7. वर्मा, प्रीति एवं श्रीवास्तव, डी.एन. (1992) बाल मनोविज्ञान एवं बाल विकास, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, संशोधित एवं परिवर्तित अष्टम संस्करण।
8. Vamedevappa HV. Impoert of parental involvement on Academic Achievement, Indian Ecuational Abstract,2005:5(1-2):22.
9. Jayaswal M Sinha, Kumari Sk, Arora K. Parental Support and academic achievement in Tribal school students of Jharkhand, Indian Education Abstracts,2005:5(1-2): 24.
10. Jammy, Judy. Journal Article, Child study,2000:30(3):205-224.
11. Agrawal KL. A study of the effect of parental encouragement upon the educational development of the students MB. Buch, Forth survey of educational in Research,1983:88(2):319.